विद्यालय हो हँसी-खुशी जाने का स्थान

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अंतर्गत राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 को प्रभावी बनाने के बावजूद विद्यालयी पाठ्यचर्या में शिक्षण काफी हद तक पाठ्य पुस्तकों तक सीमित रहा है। अधिकांश शिक्षक भी निर्धारित पाठ्यक्रम पूरा कराने में ही अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं। इससे विद्यार्थियों में न तो समझ का विकास होता है, न ही रचनात्मक कौशल का। कक्षा में समझ के साथ पढ़ना, जानकारी और मौलिक विचारों की अभिव्यक्ति करने जैसी गतिविधियों की उपेक्षा के कारण शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास में सफल नहीं हो पाती। यशपाल समिति ने अपनी रिपोर्ट शिक्षा बिना बोझ के (1993) में भारत के स्कूलों में निरर्थक और नीरस शिक्षा और कक्षा में बच्चों की समझ या बोध के अभाव को मजबूती से उजागर किया है।

दरअसल जब तक शिक्षा का अर्थ केवल अकादमिक पढ़ाई समझा जाएगा तब तक बच्चों को बस्ते के बोझ से मुक्ति मिलने वाली नहीं है। वास्तविक शिक्षा का अर्थ तो विद्यार्थी के संपूर्ण व्यक्तित्व को निखारना है, उसमें निहित प्रतिभाओं को तलाशना व तराशना है। यह बात मनोरंजक ढंग से हो तो और भी सोने पर सुहागा हो जाएगा क्योंकि खेल के प्रति बच्चों की रुचि स्वाभाविक होती है। इस ढंग से दिया गया शिक्षण मनोरंजक बनेगा। जर्मन के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री फ्रोयबल की किंडरगार्टन विधि हो, इटली की डॉ. मेरिया की मॉन्टेसरी पद्धति हो या फिर स्काउटिंग के पितामह बेडेन पावेल की शिक्षण प्रणाली, सभी में खेल-खेल में यानी मनोरंजक ढंग से शिक्षण पर बल दिया गया है।

हर्ष का विषय है कि हमारी सरकार और विभाग ने इस दिशा में एक और सार्थक कदम बढ़ाया है- शनिवार के दिन को 'गतिविधि-दिवस' घोषित करके। 'नो बैग डे' होने के कारण इस दिन विद्यार्थी अपने कंधे पर बस्ते से बोझ से मुक्त तो होंगे ही, साथ ही परंपरागत ढंग से क्लास रूप टीचिंग की एकरसता भी दूर होगी। आइये, विविध गतिविधियों के जरिये इस दिवस को इतना सार्थक बनाएँ कि शिक्षण मनोरंजक बने और विद्यालय बने हँसी-खुशी से जाने का स्थान।

-संपादक

बस्ते के बोझ से मुक्ति का दिन : शनिवार

शनिवार का दिन प्रदेश के विद्यार्थियों के लिए बहुत खास बन गया है। उस दिन विद्यालय जाते समय उनके चेहरे पर विशेष खुशी दिखाई दे रही है। क्यों न हो, इस दिन उनकी पीठ या कंधे पर बस्ता नहीं होता। बाल-दिवस के अवसर पर प्रदेश के सभी विद्यार्थियों को 'शनिवारः नो बैग डे' का उपहार जो मिला था। विभाग द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार सभी राजकीय विद्यालयों में प्रत्येक शनिवार (द्वितीय शनिवार को छोड़कर) को जॉयफुल एक्टिविटी डे के रूप में मनाया जाएगा। इस दिन विद्यालय का समय तो सामान्य दिनों की भाँति ही होगा, लेकिन विद्यार्थी बस्ते के बिना विद्यालय में आएँगे और अध्यापकों द्वारा उन्हें विभिन्न गतिविधियाँ कराई जाएँगी।

इस दिवस का शुभारंभ 14 नवंबर को पंचकूला के सैक्टर-19 में विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री पीके दास ने किया। अपने संबोधन में श्री दास ने कहा कि विभाग चाहता है कि विद्यार्थियों को विद्यालय का भय न सताए और न ही पढ़ाई बोझ बने। शिक्षण में रोचकता का समावेश बहुत आवश्यक है। केवल कुछ रट कर डिग्रियाँ एकत्रित करने का नाम शिक्षा नहीं है। शिक्षा वही है जो विद्यार्थियों का चहुंमुखी विकास करे और यह विकास केवल पुस्तकीय ज्ञान से नहीं हो सकता।

इस विशेष दिवस का शुभारंभ हिसार में मौलिक शिक्षा निदेशक श्री आरएस खरब, कुरुक्षेत्र में अतिरिक्त निदेशक मौलिक शिक्षा श्री वीरेंद्र दहिया, सोनीपत में अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री एएस मान, करनाल में अतिरिक्त निदेशक मौलिक शिक्षा श्रीमती रितु चौधरी, रोहतक में अतिरिक्त निदेशक, माध्यमिक शिक्षा श्री वीरेंद्र सहरावत तथा गुरुग्राम में निदेशक एससीईआरटी श्रीमती किरणमयी द्वारा किया गया।

प्रदेश भर से इस दिवस को विद्यालयों में धूमधाम से मनाए जाने के समाचार मिले हैं। इस दिन विद्यार्थियों का उत्साह देखते ही बन रहा था। विद्यालय मुखियाओं

'नो बैग' योजना हमें सुहाई

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त और भी ज्ञान देने की आवश्यकता होती है। विद्यार्थियों की सोचने और कल्पना करने की शक्ति को विकसित करने की आवश्यकता होती है, बच्चों में अनेक रचनात्मक क्षमताएँ होती हैं, उन्हें में उभारने की जरूरत होती है और इसके साथ ही उन्हें शारीरिक रूप से स्वस्थ रखने के लिए खेल-व्यायाम तथा योगादि गतिविधियाँ कराने की आवश्यकता होती है। विद्यालय की दैनिकचर्या में इन गतिविधियों के लिए समय नहीं मिल पाता। अब शनिवार के दिन विद्यार्थी इन सब गतिविधियों को कर पाएंगे। हर्ष का विषय है कि बहुत जोश और उत्साह से अध्यापकों और विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम का स्वागत किया है। हमें यकीन है कि इससे शिक्षण की एकरसता दूर होगी, उनमें प्रतियोगिता की भावना विकसित होगी, उनकी रचनात्मक क्षमताएँ उभरेंगी, मंच पर आकर कुछ अभिनय करने की या अपने विचारों को व्यक्त करने की हिचकिचाहट दूर होगी। अन्ताक्षरी, मूक अभिनय, शैक्षणिक प्रश्नोत्तरी आदि गतिविधियों से विद्यार्थियों का मनोरंजन तो होगा ही, वे खेल ही खेल में बहुत कुछ सीख भी पाएंगे।

श्री पीके दास
अतिरिक्त मुख्य सचिव,विद्यालय शिक्षा, हरियाणा

और अध्यापकों ने अपने-अपने विद्यालयों की गतिविधियों को सोशल मीडिया के माध्यम से भी एक दूसरे को शेयर किया। समाचार-पत्र भी इन समाचारों से भरे रहे। हिसार जिले के घिराय गाँव के आरोही मॉडल विद्यालय में प्रधानाचार्या डॉ. रमनजीत कौर ने बताया कि यह विभाग की बहुत बढ़िया शुरुआत है। उन्होंने कहा कि स्कूलों में पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद और अन्य गतिविधियों का होना भी अत्यावश्यक है। रेवाड़ी जिले के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय लूखी में इस दिन अन्य गतिविधियों के अलावा बाल कवि सम्मेलन भी कराया गया, जिसकी विशेषता यह थी कि विद्यार्थियों की अधिकतर रचनाएँ मौलिक थीं। इसी जिले के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय माजरा भालखी में इस दिन सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी कराई गई तथा वीरांगना लक्ष्मीबाई के जयंती के उपलक्ष्य में उनके जीवन वृत्त से विद्यार्थियों को परिचित कराया गया। कैथल जिले के गुहला खंड में राजकीय प्राथमिक विद्यालय भाटियां में इस दिवस की समय-सारणी में पौधारोपण, कबड्डी, कैरम, पेंटिंग और स्टोरी टेलिंग आदि गतिविधियों को स्थान दिया गया।

-शिक्षा सारथी डेस्क

हमने अब ये ठान लिया है
कहना गुरु जी का मान लिया है
सुन लो मुनिया, सुन लो बहना
शनिवार को ना नहीं कहना
बैग बिना अब आना होगा
खुशियों का नहीं ठिकाना होगा
भिन्न-भिन्न हम खेलेंगे खेल
दिन भर रहेगी रेलम-पेल
ड्रेसिज बनाने की सिखलाई
मैडम जी ने हमें बताई
कुकरी की भी क्लास लगेगी
योगा की कक्षाएं सजेंगी
विज्ञान सीखेंगे खेल-खेल में
संगीत-भाषा अजब मेल में
शनिवार होगा सबसे न्यारा
सजेगा जब संसार हमारा
शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ेगा
हरियाणा का गौरव सजेगा
धन्यवाद सरकार का भाई
'नो बैग' योजना हमें सुहाई

कुलदीप शर्मा, प्राध्यापक हिंदी
रावमा विद्यालय सैक्टर-19
पंचकूला

'सैटरडे : नो बैग डे' एक सकारात्मक कदम

शनिवार को नो बैग डे घोषित करना सचमुच एक सराहनीय कदम है। कक्षा में उदासीन से दिखने वाले छात्रों में भी गजब का उत्साह देखा जा रहा है। दैनिक दिनचर्या की एकरसता को दूर करते हुए विद्यार्थी आनन्दपूर्ण ढंग से खेल ही खेल में सीख रहे हैं। दरअसल वक्त की मांग यही है कि शिक्षण अधिक से अधिक गतिविधि आधारित होना चाहिए। बस्ते और पुस्तकों के बिना पढ़ाई की यह शुरुआत अध्यापकों और विद्यार्थियों के बीच एक अनूठे अपनत्व का भाव पैदा कर रही है। विद्यार्थी बेहद प्रसन्नता से इस कार्यक्रम का आनन्द ले रहे हैं, कमजोर विद्यार्थियों का आत्मविश्वास भी बढ़ा है। निश्चित तौर पर यह परिवर्तन शिक्षण में सकारात्मक और प्रभावी परिणाम लेकर आएगा।

जसलीन कौर
प्राथमिक शिक्षिका, सार्थक एकीकृत राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
सेक्टर-12-ए पंचकूला